भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
वर्ष-3/अंक -25/जुलाई -2023

अधिक मास

भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

वर्ष -3 / अंक -25 / जुलाई -2023

संपादक	प्रकाशन स्थल	डिजाइनिंग टीम
प्रीति माहेश्वरी	मुम्बई	MX CREATIVITY

सोशल कनेक्शन

हमसे जुड़ने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

www.bhartiyaparampara.com

paramparabhartiya@gmail.com

मूल्य

आपका कीमती समय

जुलाई माह २०२३

साका कैलेण्डर -1945 विक्रम संवत -2080 अयान - उत्तरायण ऋतु - वर्षा

सोम	31 श्रावण शु. त्रयोदशी, प्रदोष व्रत	03 आषाठ शु. पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत, गुरु पूर्णिमा	10 श्रावण कृ. अष्टमी, मासिक कृष्ण जन्माष्टमी	17 श्रावण कृ. अमावस्या, हरियाली अमा. सोमवती अमा.	24 श्रावण शु. षष्ठी, स्कन्द षष्ठी
मंगल		04 श्रावण कृ. प्रतिपदा, श्रावण प्रारंभ	11 श्रावण कृ. नवमी	18 श्रावण शु. प्रतिपदा, अधिक माह प्रारंभ	25 श्रावण शु. सप्तमी
बुध		05 श्रावण कृ. द्वितीया	12 श्रावण कृ. दशमी, मासिक कार्तिगयी	19 श्रावण शु. द्वितीया	26 श्रावण शु. अष्टमी
गुरू		06 श्रावण कृ. तृतीया/चतुर्थी	13 श्रावण कृ. एकादशी, कामिका एकादशी व्रत	20 श्रावण शु. तृतीया	27 श्रावण शु. नवमी
शुक्र		07 श्रावण कृ. पंचमी	14 श्रावण कृ. द्वादशी, रोहिणी व्रत	21 श्रावण शु. तृतीया	28 श्रावण शु. दशमी
शनि	01 आषाठ शु. त्रयोदशी, प्रदोष व्रत	08 श्रावण कृ. षष्ठी	15 श्रावण कृ. त्रयोदशी, प्रदोष व्रत	22 श्रावण शु. चतुर्थी, विनायक चतुर्थी	29 श्रावण शु. एकादशी, कमला एकादशी व्रत
रवि	02 आषाठ शु. चतुर्दशी	09 श्रावण कृ. सप्तमी	16 श्रावण कृ. चतुर्दशी,मासिक शिवरात्री	23 श्रावण शु. पंचमी	30 श्रावण शु. द्वादशी

कृ. - कृष्ण शु. - शुक्ल

गुरू प्रार्थना

आए गुरुवर द्वार पर, करहु प्रेम सत्कार।
पलकों की झाड़ू बनी, पहले देऊँ लगाय।

श्रद्धा प्रेम के पांवडे, देय सुगंध बहार।
नैनन की झाडी बनी, अंसुवन जल भर जाय।

चरण पखारूँ गुरु के, गुरुवर कीन्ह उपकार।
मैं मूर्ख नादान हूँ मानव देऊँ बनाय।

दुनिया के जंजाल में भटक रहा हर ठाऊं।
ज्ञान रोशनी से भरो दिल को आप हमार।

मन का सब भ्रम में मेट के रास्ता देऊं बताय।
आया गुरुवर शरण में रहा हाथ फैलाय।

झोली भर दो रंक की। हे गुरुवर महाराज।
गुरु पूर्णिमा के दिवस पर दे दो मुझे अशीष।

छाँड ना जाऊँ आपको, जग से करा दो पार॥

– श्रीमती उषा चतुर्वेदी जी, भोपाल (मध्य प्रदेश)

“गुरुर्ब्रम्हा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरा: गुरु साक्षात परब्रह्मा तस्मै श्री गुरुवे नमः"

हमारे भारत को विविधता का स्वरूप माना जाता है। यहां अनेक धर्म और जाति के लोग रहते हैं, इन सबके विभिन्न प्रकार के त्यौहार, खानपान, वेशभूषा सभी मे विविधता है। सभी लोग अपने अपने त्यौहार सही ढंग से मनाते हैं। उन्हीं में से एक है हमारा भारतीय त्यौहार **"गुरु पूर्णिमा"** जो कि हर धर्म, हर जाति के लोग इसे मनाते हैं। गुरु पूर्णिमा हिंदू पंचांग के अनुसार आषाढ़ शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को मनाया जाता है जिसे **"व्यास पूर्णिमा"** भी कहा जाता है। इसी दिन **महर्षि वेदव्यास जी का जन्म दिवस** भी मनाया जाता है, महर्षि वेदव्यास जी को सर्वश्रेष्ठ गुरु माना गया है।

गुरु पूर्णिमा का महत्व -

गुरु पूर्णिमा हमारे गुरु को वंदन और उन्हें आभार प्रगट करने के लिए मनाया जाता है। पुरातन काल में शिष्य को अपने गुरु के आश्रम में जाकर रहना पड़ता था। वहां शिष्य अपने गुरुद्वारे मिली हुई शिक्षा को ग्रहण करते थे। खान-पान से लेकर उनकी दैनंदिन दिनचर्या सब आश्रम में व्यतीत होती थी। गुरु की दी हुई शिक्षा हमारे अंधकार मय जीवन को प्रकाश की तरफ ले जाती है। शिष्य की शिक्षा पूरी होने पर... **गुरु को वंदन और आभार व्यक्त करते हुए, गुरु के चरण धोकर और गुरु दक्षिणा देते हुए गुरु पूर्णिमा का यह पर्व मनाया जाता था।**

संसार में कुछ ऐसे गुरु और शिष्य की जोड़ियां है जिन के किस्से आज तक हम और आप सुनते आ रहे हैं, जिनके उदाहरण हम हमारे आज की पीढ़ी के सामने रखते हैं। **गुरु द्रोणाचार्य और शिष्य अर्जुन, परशुराम के शिष्य कर्ण, महर्षि सांदीपनि के शिष्य भगवान श्री कृष्ण, महर्षि वाल्मीकि के शिष्य राम और लक्ष्मण, गुरु रामकृष्ण परमहंस के शिष्य स्वामी विवेकानंद, गुरु रामदास समर्थ के शिष्य शिवाजी महाराज।** इन सब ने अपने शिक्षा का सही उपयोग करके अपने शिक्षा और गुरु का मान सम्मान बढ़ाया है।

हमारे भारत में गुरु को प्रथम स्थान पर माना जाता है। गुरु वह है जो हमें अज्ञानता से ज्ञान की ओर ले जाते हैं। आत्म निर्भर, कर्तव्यनिष्ठ, आत्म विश्वासी और जिम्मेदार इंसान गुरु ही बनाते हैं। सोचिए ... अगर गुरु ना होते... तो हमें सच्चाई और अच्छाई के रास्ते पर कौन ले जाता? हम हमारे जीवन के बड़े-बड़े निर्णय कैसे ले पाते? सच गुरु है तो जिंदगी जीना बहुत आसान है। एक अच्छा गुरु मिलना बहुत खुशकिस्मत की बात होती है। गुरु को भगवान समान माना जाता है। उनका आदर सम्मान हमेशा करना चाहिए।

गुरु एक ऐसी छड़ी है जो हमें सिर्फ ज्ञान ही नहीं बल्कि जीवन के बड़े बड़े फैसले लेना और हमें बड़ी से बड़ी मुश्किलों से उभरना सिखाते है और साथ ही परिश्रमी, ईमानदार, सृजनशील बनना भी सिखाते है।

बचपन की पढ़ाई से लेकर हमारी पढ़ाई पूरी होने तक हमें अनेक गुरु मिलते हैं। जैसे-जैसे हम एक एक सीढ़ी पार करते हैं... वैसे वैसे हमें गुरु के द्वारा मिले गए अनेक अनुभवो से कुछ ना कुछ सीखने को जरूर मिलता है। जीवन में गुरु के बिना कुछ भी नहीं है। जिसके जीवन में एक अच्छा और सच्चा गुरु है उसका जीवन सफलता और यश से परिपूर्ण रहता है। संत कबीर दास जी के दोहे में गुरु की वंदना और उनकी स्तुति की गई है। ज्ञान और अज्ञानता का महत्व समझाया है।

"करै दूरी अज्ञानता, अंजन ज्ञान सुदये।
बलिहारी वे गुरु की हँस उबारि जु लेय ||"

इसका अर्थ है... ज्ञान का अंजन लगाकर शिष्य के अज्ञानता के दोष को दूर कर देते हैं। उन गुरुजनों की प्रशंसा है, जो जीवो को भव से बचा लेते हैं।

सभी आदरणीय गुरु को समर्पित करते हुए।

- सोनल पवार जी, अमरावती (महाराष्ट्र)

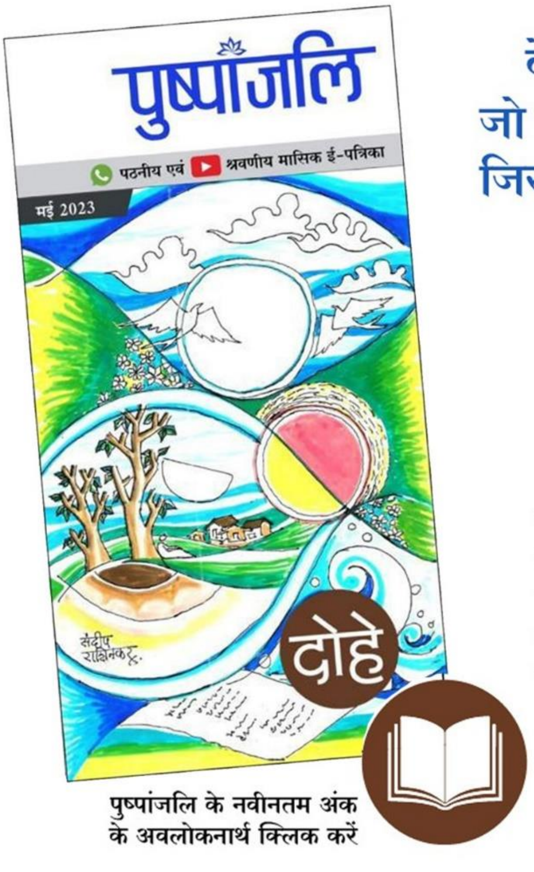

पुष्पांजलि के नवीनतम अंक के अवलोकनार्थ क्लिक करें

देश की पहली साहित्यिक ई-पत्रिका जो पढ़ी और सुनी भी जा सकती है तथा जिसमें संगीत के लिंक्स भी है जिनसे निर्मल आनंद उठाया जा सकता है।

मूल्य : मात्र आपकी मुस्कान

सामने दिए गए चिह्न को दबाने से आपका सन्देश स्वचलित रूप से हमें पहुँच जाएगा और नियमित पत्रिकाएँ भेजने के लिए आपका मोबाइल नं. पंजीकृत हो जाएगा।

8610502230 (केवल संदेश हेतु)
(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

अगर आप अपने

‘शब्दों के मोती’

भारतीय परम्परा की माला में पिरोना

चाहते है तो हमे सम्पर्क करें!

आपका लेख वेबसाइट

पर भी प्रकाशित किया जायेगा

paramparabhartiya@gmail.com

भारत कहिए या आर्यावर्त कहिए संबोधन कुछ भी रहा हो मगर भाव सदा अविरल गंगा की धारा की तरह रहे हैं पूर्ण रूप से स्वच्छंद, पूर्ण रूप से पवित्र। **स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी जी** की कविता अनायास ही याद आ जाती हैं जब भारत की गौरवमयी महिमा का गुणगान होता है।

"भारत जमीन का टुकड़ा नहीं, जीता जागता राष्ट्रपुरुष है।
हिमालय मस्तक है, कश्मीर किरीट है,
पंजाब और बंगाल दो विशाल कंधे हैं।
पूर्वी और पश्चिमी घाट दो विशाल जंघायें हैं।
कन्याकुमारी इसके चरण हैं, सागर इसके पग पखारता है।
यह चन्दन की भूमि है, अभिनन्दन की भूमि है।
यह तर्पण की भूमि है, यह अर्पण की भूमि है।
इसका कंकर-कंकर शंकर है, इसका बिन्दु-बिन्दु गंगाजल है।
हम जियेंगे तो इसके लिये, मरेंगे तो इसके लिये।"

इस कविता की पंक्तियां ही हमारे पावन पर्व की आधारशिला हैं, उच्च पीठिका हैं जिसे हम सभी एक विशिष्ट नाम से जानते हैं - हरियाली अमावस्या।

यह भारत की ही भूमि हैं जहाँ सभी को समान समझा जाता है जिसमें पेड़ो से लेकर नदियों तक,पहाड़ो से लेकर ग्रहों तक, जीव से लेकर जंतुओं तक, जल से लेकर थल तक और थल से लेकर नभ तक एक समान पूजा का भाव विधमान हैं और यह मान्यता है कि इन सभी में परमात्मा ही निवास करता है। इस कथन को सत्य करने के लिए जो पर्व प्रतिनिधित्व करता है उस प्रतीक पर्व का नाम है- **"हरियाली अमावस"**। जिसे हम सभी श्रावण मास कृष्ण पक्ष की अमावस्या को मनाते हैं।

यह भारतवर्ष ही है जो किसी पर्व, त्योहार, उत्सवों के आगमन और प्रस्थान में भी समान रूप से अपने आराध्य का आराधक बना रहता है। जैसे पश्चिम दिशा में सूर्यास्त के समय में भी हम पूजा का थाल लिए ईश्वर से कल्याण की कामना करते हैं जिसे हम छठ पूजा कहते हैं ठीक उसी प्रकार जब हम अपनी प्रकृति की उपासना करते हैं, श्रावण मास के आगमन की प्रतीक्षा करते हैं तथा उसके आगमन पर सहर्ष स्वागत करते हैं उसे हम हरियाली अमावस्या के नाम से जानते हैं।

यह पर्व कोई साधारण पर्व नहीं बल्कि विशिष्ट पर्व है, विशिष्ट इसलिए क्योंकि जिस प्रकार सामर्थ्य, शक्ति का परिचायक होता है ठीक उसी प्रकार शक्ति प्रकृति की परिचायक है। इसे यूँ समझिए जो प्रकृति में है, वो शक्ति में है। मान्यता है कि पीपल के वृक्ष में त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु और महेश का निवास है, आंवले में जिस प्रकार लक्ष्मी नारायण का निवास है ठीक उसी प्रकार प्रकृति में ही शक्ति का निवास है। अतएव जो मनुष्य प्रकृति का उपासक है तो यह तय है कि वह शक्ति का साधक है।

प्रकृति माँ है, जनकल्याणी हैं, हम मनुष्य है अबोध बालक हैं, अबोधता में हम कभी कभी प्रकृति का और स्वयं का भी नुकसान कर लेते हैं मगर माँ तो माँ है, अपने बच्चों की अबोधता को भी सहज स्वीकार कर लेती हैं और जरा सा दुलारने पर ही वह अपने आनन्द में अपने बच्चों को समाहित कर लेती हैं। माँ का अपने बच्चों के प्रति अमिट स्नेह और अगाध प्रेम तथा बच्चों के द्वारा अबोधता में की गयी नादानियों के लिए प्रकृति माँ से क्षमा मांगना और पालन हेतु धन्यवाद ज्ञापन करने का ही नाम है **"हरियाली मावस या हरियाली अमावस्या"**।

मनुस्मृति खुलकर उद्घोषणा करती हैं-
" माता भूमि पुत्रोहं पृथिव्या, उदार चरितानां, वसुधैव कुटुम्बकुम।"
(भूमि मेरी माता है और मैं इसका पुत्र हूँ। उदार चरित्र धारण करने वालों के लिए यह पूरी पृथ्वी ही उनका परिवार है।)

यह विशिष्ट धारणा ही इस हरियाली अमावस की अमृत धारा है जो सदैव ईश्वर से हाथ जोड़कर कामना करती है - **'हे ईश्वर मेरे देश के सभी जलाशयों में, कूपों में, तालाबों में सदा गंगा की धारा की तरह जल बना रहे, अरण्यों में, भवनों में, वृक्ष सदा फलों से लदे रहें, उद्यान हो वाटिका हो वानिकी हो यहां सदा पुष्प पल्लवित होते रहें, हे ईश्वर हमारी यह भारतीय परंपरा, सनातन विश्वास अमिट और अक्षुण्ण बना रहे।'** इन सभी सौभाग्य मंगल कामनाओं का प्रतीक है हरियाली अमावस्या।

पर्व के दिन क्या करें ??
- पवित्र आचरण धारण करें।
- समुचित दान दक्षिणा दें।
- स्नानादि से निवृत्त होकर पीपल और तुलसी, आंवले इत्यादि वृक्ष का पूजन करें तथा उनकी परिक्रमा करें।
- हल इत्यादि कृषि यंत्रों का पूजन करें।
- पितरों की शांति के लिए पूजा अर्चना करें।

- डॉ. किशोर कुमार शर्मा जी, धौलपुर (राज.)

भारतीय परम्परा

की मासिक ई-पत्रिका
के पुराने सभी अंकों को
देखने के लिए किताब के
आइकन पर स्पर्श करें !

Elegant Homes..
Time to Shift
Limited Flats Available
WHITE BERRY
RESIDENCY
OC RECEIVED
OC
Received
1, 2 BHK & Jodi Flats
with modern amenities
www.whiteberryresidency.com
Asha Nagar, Thakur Complex, Kandivali (E), Mumbai.
98705 80810, 85913 69996

GAATHBANDHAN
Kings weds Queens
www.kingswedsqueens.com
HER
and
HIM
Sample Text Sample Text
Wedding
+91 7303021123
PAPER - LESS
&
SHIPPING - FREE
WEDDING
INVITATION
Call Us

162. युद्ध में श्रीकृष्ण को निमंत्रित करने कौरव और पाण्डवों की ओर से कौन-कौन गया...?
- पाण्डवों की ओर से अर्जुन और कौरवों की ओर से दुर्योधन श्रीकृष्ण को अपने पक्ष की ओर युद्ध में भाग लेने हेतु निमंत्रण देने पहुंचे।

163. श्रीकृष्ण को निमंत्रित करने पहले कौन पहुंचा...?
- श्रीकृष्ण के शिविर में सबसे पहले दुर्योधन पहुंचा उस समय श्रीकृष्ण शयन शयन कर रहे थे। दुर्योधन उनके सिरहाने की ओर रखें उत्तम सिंहासन पर बैठ गया।

164. श्रीकृष्ण को निमंत्रित करने अर्जुन कब पहुंचे...?
- दुर्योधन के पहुंचने के थोड़ी देर बाद अर्जुन पहुंचे और नम्रता के साथ श्रीकृष्ण के चरणों की ओर खड़े हो गये।

165. श्रीकृष्ण ने किसका निमंत्रण स्वीकार किया...?
- दुर्योधन के यह कहने पर कि वह पहले पहुंचा है तो श्रीकृष्ण ने कहा कि इसमें संदेह नहीं कि आप पहले पहुंचे, किन्तु मैंने पहले अर्जुन को देखा है। आप मेरे पास पहले आये और मैंने अर्जुन को पहले देखा इस कारण मैं दोनों पक्षों की सहायता करूंगा।

166. श्रीकृष्ण ने दोनों की सहायता कैसे की...?
- श्रीकृष्ण ने कहा कि एक पक्ष की ओर से मेरी समस्त पराक्रमी नारायणी सेना युद्ध करेगी और दूसरे पक्ष की ओर मैं अकेला। मैं न तो युद्ध करूंगा और न ही शस्त्र धारण करूंगा।

167. अपना विकल्प चुनने का अधिकार पहले किसे दिया और क्यों...?
- श्रीकृष्ण कहते है कि, हे अर्जुन...! उम्र में तुम दुर्योधन से छोटे हो अत: धर्मानुसार, दोनों विकल्पों में से चयन का पहला अधिकार तुम्हारा है।

168. अर्जुन ने किसको चुना...?
- श्रीकृष्ण को। क्योंकि अर्जुन जानते थे कि श्रीकृष्ण शत्रु दमन नारायण के साक्षात अवतार है और जहां श्रीकृष्ण है वहां विजयश्री है।

169. श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलदेव जी ने किसका निमंत्रण स्वीकार किया...?
- दुर्योधन व अर्जुन से निमंत्रण प्राप्त करने पर बलदेव जी बोले कि- "पुरुष श्रेष्ठ...! मैं श्रीकृष्ण के बिना एक क्षण भी नहीं रह सकता; अत: उनका रुख देखकर मैंने यह निश्चय किया है कि मैं किसी पक्ष में शामिल नहीं होऊंगा।" इतना कह बलदेव जी तीर्थ यात्रा को चले गये।

170. दोनों पक्षों की ओर से युद्ध में उपस्थित सेना की संख्या क्या थी...?
- कौरवों के पक्ष में ग्यारह अक्षौहिणी व पाण्डवों के पक्ष में शामिल सेना की संख्या सात अक्षौहिणी थी।

171. अक्षौहिणी का क्या अर्थ है...?
- अक्षौहिणी एक संस्कृत शब्द है जिसका आशय है चतुरंगिणी सेना। अक्षौहिणी प्राचीन भारत में सेना का माप हुआ करता था। यद्यपि कोई सर्वमान्यता नहीं है तो भी यह माना गया है कि एक अक्षौहिणी सेना में 21870 रथ, 21870 हाथी, 21870 के तीन गुना अर्थात 65610 घोड़े, और 21870 के पांच गुना अर्थात 109350 सैनिक होते थे। (सूचना: अंतरजाल से) ज्ञातव्य रहे कि चतुरंगिणी सेना से आशय ऐसी सेना से है जिसमें हाथी, घोड़े, रथ और पैदल ये चारों अंग हो।

172. शान्ति के पहले प्रयास के रूप में पांडवों ने किसे दूत बनाकर भेजा...?
- द्रुपद के पुरोहित को।

173. विदुर नीति क्या है...?
- युद्ध के लिये दोनों सेनाओं के एकत्रित हो जाने पर कौरव सेना की पराजय से आशंकित, विकल व चिंतित धृतराष्ट्र ने विदुर से धर्मयुक्त व कल्याण की बातें कहने को कहा। प्रत्युत्तर में विदुर जी ने जो वचन कहे, वे विदुर नीति के रूप में प्रसिद्ध है।

174. युद्ध शुरू होने से पहले कौरव सभा में कर्ण ने क्या प्रतिज्ञा की...?
- भीष्म पितामह द्वारा कर्ण की अवज्ञा करने पर क्रुद्ध होकर कर्ण ने प्रतिज्ञा की जब तक पितामह रणभूमि में है, वह अपने शस्त्र नहीं उठायेगा।

175. पांडवों द्वारा शांति के अंतिम प्रयास के रूप में किसे दूत बनाकर कौरवों के पास भेजा गया...? - यदु श्रेष्ठ श्रीकृष्ण को।

176. श्रीकृष्ण ने हस्तिनापुर में कहां पर रात्रि विश्राम किया...?
- कौरवों के मंत्री व भगवान के भक्त, विदुर के घर पर।

177. श्रीकृष्ण ने शांति हेतु क्या प्रस्ताव रखा...?
- कि पांडवों ने शर्तों का पूर्ण पालन किया है अत: पांडवों को उनका यथोचित पैतृक राज्य लौटाया जाये।

178. दुर्योधन ने श्रीकृष्ण के प्रस्ताव का क्या प्रत्युत्तर दिया...?
- दुर्योधन ने कहा कि जब तक मैं जीवित हूं, तब तक पांडवों को इतनी भूमि भी नहीं दे सकता जितनी कि एक बारीक सुई के नोक से छिद सकती हो।

179. भगवान श्रीकृष्ण ने कौरव सभा में अपना विश्वरूप क्यों दिखाया...?
- क्योंकि दुर्योधन द्वारा भगवान श्रीकृष्ण को कैद करने का दुस्साहस किया गया।

- माणक चन्द सुथार जी, बीकानेर (राज.)

भारतीय परम्परा
की मासिक ई-पत्रिका
नियमित प्राप्त करने हेतु हमें
सम्पर्क करें!

- व्हाट्सप्प और टेलीग्राम पर से हर महीने के शुरू में नया अंक प्रेषित किया जाता है। यदि किसी कारणवश आपको नया अंक नहीं मिला हो तो कृपया हमें सूचित करें।

- भारतीय परम्परा ई-पत्रिका के लिए दिए गए नंबर **7303021123** को मोबाइल में सेव करें और व्हाट्सप्प एवं टेलीग्राम के ग्रुप से जुड़े।

- ई-पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया के आइकॉन बने हुए है उन्हें स्पर्श करने पर आप उस लिंक पर इंटरनेट के माध्यम से पहुँच सकते है।

- ई-पत्रिका में कुछ त्रुटियाँ हो तो हमें जरूर बताये और आपको पत्रिका पसंद आये तो अपने परिवारजनों और मित्रों के साथ शेयर करें।

- **भारतीय परंपराओं** को संजोये रखने एवं ई-पत्रिका को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपके सुझावों और विचारों से अवगत जरूर कराये।

रोटी की महक

बचपन से ही
गरम गरम बनती, रोटी की महक
उसे दीवाना - सा कर देती है
आपने भी महसूस की होगी
ताजी - ताजी, सोंधी - सोंधी खुशबु
जो रोटी के बनते ......
चारों ओर फैल जाती है.

बचपन में चुल्हे के पास बैठ,
रोटी बनाती माँ को वो घंटों निहारा करता
था और ......
शुरू से आखिरी रोटी के सिंकने की महक
को अपने नथुनों में भरा करता था
वहां से हट जाने के लिए
कई बार मार भी खाया करता था.
पर वो ..... बनती - सिंकती ....
गोल-गोल, फूली फूली .....
रोटियों का स्वाद बिन खायें ही पा जाता था.

आज तो आदमी रोटी कमाने के चक्कर में,
आप धापी वाली जिन्दगी में,
ऐसा उलझा है कि उसे खबर ही नही है
कि कब सुबह की रोटी बनी
कब शाम की !
अब तो ... ना ही वो चूल्हे हैं
ना ही माँ है.

वो .... अब सपनों में .... ख़्यालों में ....
सिकती बनती रोटी की महक को पा खुश
हो लेता है।

- नरेश कानूनगो जी, देवास, (म.प्र.)

वृक्ष लगाएं

आओ ! हम सब वृक्ष लगाएं।
भविष्य देश का हम बचाएं।
वृक्ष लगाकर हम धरा को
हरियाली से आज सजाएं।

बिना वृक्ष के लगती हमको
धरती सूनी - सूनी।
वृक्षों से बढ़ जाती इसकी
शोभा दूनी - दूनी।

वृक्ष धरा पर लाते खुशियां
दूर प्रदूषण करते।
मिट्टी का ये रोक कटाव
वर्षा कर, दु:ख हरते।
वृक्ष निभाते साथ हमारा
बनकर सच्चे साथी।

रक्षा इनकी करना हमको
ये ही हमारी थाती।
काट सके न कोई इनको
रखना है यह ध्यान।
नहीं हितैषी इनसे बढ़कर
देना है यह ज्ञान।

जड़ से लेकर फल तक इनके
काम हमारे आते।
शीतल छाया देकर पथ की
शोभा वृक्ष बढ़ाते।

- अशोक आनन जी, मक्सी, शाजापुर (म.प्र.)

योजना, सिंचाई एवं उर्जा मन्त्रालय के अलावा गृहमंत्री, श्रम एवं रोजगार मन्त्री फिर रेलमंत्री के अलावा न केवल योजना आयोग के अनेक वर्षों तक उपाध्यक्ष रहे बल्कि **दो बार कार्यवाहक प्रधानमंत्री रहे सिद्धान्तवादी, मितव्ययी भारत रत्न गुलजारी लाल नन्दा जी** के 126वीं जयन्ती पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुये आपको बताना चाहता हूँ कि स्व. नन्दा जी को कुरुक्षेत्र को भारत के पर्यटन स्थल पर स्थापित करवाने के लिये हमेशा श्रद्धापूर्वक याद किया जायेगा।

इसके अलावा इनके अथक प्रयास से देश में एक ऐसा सशक्त श्रम कानून आ पाया जिसको आज तक बदलने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी। ये सिद्धांतों के पक्के ऐसे राजनेता थे जिन्होंने खुलकर इन्दिरा गांधी के आपातकाल लगाने के फैसले से न केवल नाराजगी जताई बल्कि उस आपातकाल के बाद सभी नामीगिरामी हस्तियों के बारबार मनाने के बावजूद कभी चुनाव नहीं लड़ा। उस समय स्वतंत्रता सेनानी होने के नाते हर स्वतंत्रता सेनानी को 500 रुपये प्रति महीने का पेंशन भत्ता मिलता था, लेकिन नन्दा जी ने यह कहते हुए इस पैसे को अस्वीकार कर दिया था, कि **'उन्होंने स्वतंत्रता सेनानियों के भत्ते के लिए स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी ही नहीं है'।**

अब मैं आप सभी को दृढ संकल्पित सिद्धान्त के पक्के नन्दा जी के साथ घटी दो घटना प्रस्तुत कर रहा हूँ -

1) नन्दा जी जब गृहमन्त्री थे तब उन्होंने अपने ही राजनीतिक दल के एक बड़े नेता को भ्रष्टाचार केस में दोषी पाया तो बिना विलम्ब उन्होंने उसे गिरफ्तार करवा जेल भेज दिया। हालांकि इस घटना से उनके दल के अनेक सदस्य नाराज हो गये लेकिन ये अपने निर्णय पर अटल रहे फलस्वरूप उन सभी भ्रष्टाचार में संलिप्त नेताओं ने उनके खिलाफ षड्यंत्र रचकर उन्हें गृह मंत्रालय से हटवा दिया!

2) दूसरी घटना जो इनकी मृत्यु के मात्र छह वर्ष पूर्व घटी जिसके अनुसार एक बार एक पत्रकार यह देख आश्चर्यचकित रह गया कि दिल्ली के डिफेंस कॉलोनी स्थित एक मकान के सामने एक 94 वर्ष के वरिष्ठ, अपने बहुत ही अल्प सामान के साथ उस मकान से निकाले जाने पर उस मकान के बाहर मकान मालिक से किराया चुकाने के लिये थोड़ा और वक्त माँग रहा है। साथ ही कुछ पड़ोसी भी उस बूढ़े के शालीन व्यवहार के चलते मकान मालिक को राजी करने की चेष्टा कर रहे हैं। कुछ ना नुकर के बाद मकान मालिक राजी तो हो जाता है लेकिन उसकी अनिच्छा स्पष्ट झलक रही थी।

यह सब देख, सुन पत्रकार ने उन सभी की जो फोटो ले ली थी, के साथ यह समाचार अपने समाचारपत्र में प्रकाशन हेतु अपने समाचारपत्र के मालिक को जब प्रस्तुत किया तो उस पत्र के मालिक ने उस पत्रकार से पूछा यह बूढ़ा कौन है?

तो उसने अपनी अनभिज्ञता जतायी। लेकिन अगले दिन अखबार के पहले पन्ने पर बड़ी खबर छपी। शीर्षक था, **"भारत के पूर्व प्रधान मंत्री गुलजारीलाल नंदा एक दयनीय जीवन जी रहे हैं"।** उस खबर में सम्पादक ने एक टिप्पणी भी लिखी कि आजकल के राजनीतिज्ञ खूब पैसा कमा रहे हैं जबकि एक व्यक्ति जो दो बार पूर्व प्रधान मंत्री रह चुका है और लंबे समय तक केंद्रीय मंत्री भी रहा है, उसके पास अपना ख़ुद का घर भी नहीं।

इस समाचार का असर ही था कि अगले दिन ही वर्तमान प्रधानमंत्री ने मंत्रियों और विशिष्ट अधिकारियों को वाहनों के बेड़े के साथ उनके घर भेजा। इतने विशिष्ट अधिकारियों के वाहनों के बेड़े को देखकर मकान मालिक दंग रह गया। तब जाकर उसे पता चला कि उसका किराएदार, श्री गुलजारीलाल नंदा भारत के पूर्व प्रधान मंत्री थे। मकान मालिक अपने दुर्व्यवहार के लिए तुरंत गुलजारीलाल नंदा के चरणों पर झुक गया।

अधिकारियों और विशिष्ट अधिकारियों ने गुलजारीलाल नंदाजी से जब सरकारी आवास और अन्य सुविधाएं को स्वीकार करने का अनुरोध किया तब नन्दाजी ने बड़ी ही विनम्रता से उन्हें **"बिना श्रम किये जनता से टैक्स में मिले पैसा लेना महापाप है"**, बता निरुत्तर कर दिया साथ ही इस बुढ़ापे में ऐसी सुविधाओं का क्या काम, यह कह कर उनके प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया।

अंतिम श्वास तक वे एक सामान्य नागरिक की तरह, एक सच्चे गांधीवादी एवं सिद्धांत के प्रति संपूर्ण रूप से प्रतिबद्ध और ईमानदार स्वतंत्रता सेनानी बन कर ही रहे। ऐसे निर्लोभी, वास्तविक फकीर और संत महापुरुष को **वर्ष 1997 में पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी व श्री एच डी देवगौड़ा के मिले-जुले सद्प्रयासों से भारत रत्न से सम्मानित किया गया** ।

अन्त में हम सभी यही आशा करते हैं कि वर्तमानकाल के राजनेताओं में से भी कोई तो ऐसा उभरेगा जो श्री गुलज़ारीलाल नन्दा जी जैसे मन-वचन और कर्म से न केवल पवित्र बल्कि अपने किये गये वादों के प्रति ईमानदार, प्रतिबद्धता एवं सत्यनिष्ठा के साथ अपने सिद्धांतों के प्रति अडिग खड़ा दिखायी देगा।

- गोवर्धन दास बिन्नाणी जी, 'राजा बाबू', बीकानेर (राज.)

समय
बहरा है कभी किसी की
सुनता नहीं है,
लेकिन

अँधा नहीं है,
देखता सबको है।

रिश्ते अक्सर अहंकार
और ग़लतफ़हमी
के कारण बिगड़ते है
क्योंकि
अहंकार सच सुनने
नहीं देता और
ग़लतफ़हमी सच
देखने नहीं देती।

समय
कई जख़्म देता है...
इसलिए

घड़ी में फूल नहीं
कांटे होते हैं।

चेहरे पर मुस्कान
और
दिल में जहर
यही है आज कि

दुनिया का कहर..!

स्वभाव हो तो दीपक
की तरह
जो बादशाह के महल में
भी उतनी ही रोशनी
देता है जितनी
एक गरीब की
झोपड़ी में।

बचपन की बारिश
में एक कश्ती हुआ
करती थी,
होती बेशक
कागज की थी
पर हमारे संग एक उम्र
जिया करती थी।

"लगता है तुम फिर मुंगेरीलाल की तरह सपने देखने लगे हो हरिया कहते हुए श्याम मुस्कुराने लगा हर साल यहीं क्रम चलता है तुम्हारा, मृग लगे नहीं की तुम्हारे सपनों की डोर तो जैसे आसमान छूने लगती है। अरे जो बादल गरजते हैं वो बरसते नहीं समझ लेना इतने ख्वाब देखना और फिर मुंह के बल गिरना तुम्हें तो आदत पड़ गई है जैसे।"

तुम्हारी कोई दुश्मनी है क्या श्याम इन्द्र देव से जब-तब बरसात को लेकर उलाहने देते हो। महंगा सस्ता जैसा भी हो दो समय का भोजन तो इसी खेती की बदौलत कर तो रहे हो। मैं तो प्रकृति का पूजारी हूँ श्याम और इसीलिए सपने भी देखता हूँ ।
देखो ! जरूर देखो फिर सपने टूटे तो दिल छोटा न करना।
मुझे विश्वास है श्याम मेरे सपने अब की बार टूटेंगे नहीं और आजतक जो टूटते आए हैं न उसके जिम्मेदार हम ही।
"ओहो तुम तो ज्ञान भरी बातें करने लगे हो हरिया।"
बताओ तो जरा हम बेबस, लाचार किसानों का क्या दोष है ?
हमें प्रकृति से बहुत उम्मीदें लगी रहती हैं किंतु हम प्रकृति के साथ जो खिलवाड़ करते हैं वह हमें दिखाई नहीं देता। हम जिसे जैसा देंगे वहीं तो पाएंगे इतना भीषण ताप जो हम सह नहीं पाते यह हमारे ही द्वारा प्रकृति पर किए आघात का प्रतिफल है।
"सीधे-सीधे कहो तुम कहना क्या चाहते हो?"
तो सुनो श्याम कितने हरे-भरे पेड़ पौधे लगे थे, पीपल, नीम के बड़े-बड़े पेड़ कितनी शीतल पुरवाई देते थे जिनकी छाया में मन को सुकून मिलता पर तुमने तो वह पेड़ ही काट दिए और वहां अपना मकान बना लिया।

"हरिया मैंने मेरे ही प्लॉट पर मकान बनवाया कोई गुनाह तो नहीं किया मेरे भाई।"
माना प्लॉट तुम्हारा था पर पेड़ों पर कुल्हाड़ी चलाते हुए तुम्हारा हृदय जरा भी नहीं पसीजा यह तो एक तुम्हारी बात हुई न जाने कितने ही लोग ऐसा करते हैं। तुम्हें मकान बनवाना था सही है, पर क्या तुमने जितने पेड़ तोड़े उतने फिर से आस-पास कहीं लगाएं, नहीं लगाएं फिर हम क्या बरखा रानी से उम्मीद करें कहते हुए हरिया घर के लिए निकला।
कुछ ही देर में घनघोर काले बादलों से निकल बरखा रानी धरती पर छम-छम नर्तन करने लगी।

श्याम ने पचास पौधे इकट्ठे लाएं और हरिया को आवाज लगा बुला लिया बरसात में दोनों ने मिलकर खूब पेड़ पौधे लगाए।
अब की प्रकृति ने हरिया की पुकार सुन ली और उसके सपने आकार लेने लगे थे।

- राजश्री राठी जी, अकोला (महाराष्ट्र)

पारंपरिक व्यंजन-गट्टे का अचार

सामग्री - 1 किलो कच्चा आम (केरी), पाव किलो बेसन, 1 किलो तेल, आधी कटोरी राई की दाल, एक कटोरी मिर्ची, पौना कटोरी नमक, पाव कटोरी सौंफ, आधा चम्मच हल्दी, लौंग 5, काली मिर्च 6-8 दाने।

विधि - सबसे पहले आम को साफ करके छिलका निकाल कर कद्दूकस करें। नमक -हल्दी लगाकर आधे घंटे छोड़ दे, उसके बाद उसका पूरा पानी निचोड़ ले, फिर उस पानी में बेसन डालना, उसमें एक बड़ा चम्मच तेल का मोयन डालना, चुटकी भर हींग भी डालना, एक चम्मच नमक, एक चम्मच मिर्ची, एक चम्मच सौंफ डालकर मिलाकर गूंथ लेना। फिर उसके गट्टे बनाकर तल लेना। फिर तेल अच्छा गर्म करके सब मसाले मिलाना। गरम तेल में सबसे पहले नमक डालना, फिर हींग, हल्दी, लौंग, सौंफ, काली मिर्च, बाद में राई की दाल डालना। पूरा ठंडा होने पर मिर्ची डालना। उसके बाद किसा हुआ आम और गट्टे मिलाना। इसमें तेल दो अंगुल ऊपर रखना। यह अचार 6 - 8 महीने तक खराब नहीं होता है।

रसोई युक्तियाँ -

1) गीला नारियल अगर उसके कड़क छिलके से अलग करना हो तो संपूर्ण नारियल को उसके पूरे बालों सहित थोड़ी देर गैस पर रखें, कुछ देर बाद टुकड़े करें।

2) गाजर व ककड़ी 6- 8 घंटे बर्फ के पानी में रखने से एकदम ताजी जैसी होती है।

3) बरसात के दिनों में नमक अक्सर गीला हो जाता है, एक छोटे से कपड़े में साबुत चावल बंद कर नमक के डिब्बे में या बोतल में रखने से नमक अच्छा रहेगा।

4) नमक के डिब्बे का ढक्कन खुला रखने से नमक में से आयोडीन तत्व हवा में घुल जाता है, जिसके कमी के कारण हमें थायराइड नामक बीमारी होती है।

घरेलू नुस्खे -

1) धूप लग गई हो तो प्याज का रस निकालकर पूरे बदन पर लगाए।

2) रात में धना, जीरा, सौंफ समान मात्रा में लेकर थोड़ी मोटी पीसकर पानी में भिगोए। सवेरे छानकर वो पानी पीने से धूप काले में तकलीफ कम होती है।

3) पसीना अगर बहुत आता हो तो पानी ज्यादा पीना आवश्यक है। पसीना निकलने के कारण गर्मी में शरीर से पानी की कमी हो सकती है।

4) बरसात के दिन में फोड़ा फुंसी हो गई हो तो उसके ऊपर कड़ुनीम पीसकर पेस्ट लगाएं।

विविधा कुकिंग क्लासेस, पूनम राठी जी, नागपुर

लघुकथा – कालिंदी का दर्द

पाखी को समझ नहीं आ रहा था कि हमेशा खुश रहने वाली कालिंदी दीदी को अचानक ऐसा क्या हुआ कि वो सबको नज़र अंदाज़ करने लगी?
हर समय सबके साथ हंसने- बोलने वाली अब आंखें क्यों चुरा रही हैं? उनके चेहरे की मोहक मुस्कान भी गायब है! पाखी को उनके चेहरे की उदासी बैचेन कर रही थी!
कारण तो यह था कि वह जब तब परेशान होती तो कालिंदी दीदी के पास आती और मन की सारी दुविधा सुना देती! सुनकर वो उसका समाधान इस तरह करती कि पाखी का सारा तनाव छूमंतर हो जाता!
कालिंदी दीदी यहाँ अकेली रहती है! किसी ऑफिस में नौकरी करती है! पाखी कभी कभी उनके लिए खाना ले आती है! खासकर उनकी पसंद का जो वह बनाती हैं!
आज वह कालिंदी दीदी के ऑफिस से आने का इंतज़ार करने लगी –
अपने घर की खिड़की से रास्ते पर नजरें गड़ाए! आज भी उसने उनकी पसंद का खाना बनाया! उनसे मिलने को आतुर मन उसे एक एक पल भारी लग रहा था! जैसे ही कालिंदी दीदी आती दिखी, वह तुरंत रसोई में गयी और टिफिन में खाना रखकर बाहर की ओर दौड़ पड़ी!
कालिंदी के दरवाजे पर दस्तक देने ही वाली थी कि उसे किसी पुरुष के चिल्लाने की आवाज़ सुनाई दी!
वह कह रहा था-"कालिंदी मुझे आएं चार दिन हो गये और तुम हो कि टस से मस नहीं हो रही हो !"
साथ ही एक तड़ाक की आवाज आयी..
कालिंदी ने चिढ़ कर कहा- "क्या बोलूं? मैंने तो पहले ही कह दिया था कि अब मेरा लौटना संभव नहीं! तुम चले जाओ किसने रोका है तुम्हें?"
पाखी के पांव वही जम गये!
उसे अब थोड़ा-थोड़ा अंदाजा हुआ कि कालिंदी दीदी क्यों सबकी अनदेखी कर रही थी!
उसे उनकी मुस्कुराहट के पीछे का छीपा दर्द दिखाई दिया!
कालिंदी दीदी की उदासी का कारण समझ में आ गया! कहीं कालिंदी दीदी नाराज न हो जाए! वह बाहर से ही लौटने का सोच ही रही थी कि अचानक दरवाजा खुला और दनदनाता एक आदमी निकला और बाहर की तरफ दौड़ता हुआ चला गया! दरवाजा खुला ही था!
पाखी टिफिन के साथ प्रविष्ट हुई!
उसने देखा! कालिंदी दीदी अपने हाथों में मुंह छुपाए सिसक रही है! उनके कंपन से कुर्सी भी जैसे कंपित हो रही थी!
उसने टिफिन मेज पर रख दिया!
अब उसे कुछ भी पूछने की जरूरत नहीं थी!

– डॉ. उषा माहेश्वरी पुंगलिया जी, जोधपुर (राज.)

समय और साबुन के
अलावा अगर कोई चीज
हाथ से फिसलती है तो
वह है..

“आम की गुठली”

पढ़ाई पूरी करने के बाद
नौकरी में थोड़ा क्या उलझे
कमबख्त
जिंदगी
भैया से अंकल
पर पहुंच गई !!

पहले लोग
सोते-जागते थे
अब

Offline-Online
होते हैं..!!

Chai GPT
(Genuinely Pure
Tea)
enhanced with
AI
(Adrak & Ilaichi)

जिसके पास AC नहीं
उसे गर्मी से पसीना आ रहा
है,
जिसके पास AC है
उसे बिल देखकर पसीना
आ रहा है..!!

आधुनिक कवि का दोहा –

क्रीम लगा-लगा जग
मुआ... गोरो भयो न कोय,

Oppo Vivo फ़ोन लियो
अब कालो बचो न कोय।

प्रेरक – डिजिटल उपवास

मोबाइल, टैबलेट, लैपटॉप और इन्टरनेट आज बच्चों की ज़िन्दगी का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुके हैं।

आज माता-पिता को इस बात की चिन्ता है कि इनका असर बच्चों की आँखों के साथ-साथ उनके दिमाग पर भी पड़ रहा है।

इसे पूरी तरह से रोका तो नहीं जा सकता, परन्तु बच्चों की ज़िन्दगी में इन उपकरणों का उपयोग कम ज़रूर किया जा सकता है।

हालांकि इन आधुनिक उपकरणों को कम करने की बात हो रही है, लेकिन इनकी अहमियत को भी नकारा नहीं जा सकता।

ये विद्यार्थियों को शिक्षा में नवीन जानकारियों को जानने में एवं साथ ही कुछ हद तक तनाव को दूर करने में भी सहायक होते हैं।

लेकिन, इन सबके बावजूद सबसे ज़रूरी बात यह है कि इन माध्यमों को बच्चे कितना समय देते हैं??

हमें यह देखना होगा कि इनका उपयोग बच्चे लगातार अधिक समय तक ना करें, बीच-बीच में थोड़ा विराम अवश्य लें, अर्थात इन सबसे थोड़ी देर के लिए पूरी तरह से दूर रहें।

लेकिन, इसका अर्थ यह नहीं है कि लैपटॉप छोड़ कर मोबाइल या टैबलेट उठा लें।

अभिभावकों को चाहिए कि वे बचपन से ही बच्चों की पसंद को देखते हुए उनको अलग-अलग रचनात्मक कोर्स जैसे संगीत, गिटारवादन,नृत्य, चित्रकला.. इत्यादि में भेजें।

साथ ही उनके पसंद के खेलों को बढ़ावा देना चाहिए, ताकि वो इन डिजिटल माध्यमों से दूर रहें।

बच्चों के साथ हमें ख़ुद भी कुछ समय के लिए इन माध्यमों से दूरी बनानी चाहिए, तभी बच्चे भी जल्दी सीखते हैं।

जब हम इस तरह का **डिजिटल उपवास** बच्चों के सामने करते हैं, तो बच्चों पर इनका सीधा सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

भोजन करते समय हम स्वयं अपने मोबाइल को दूर रखें और यह नियम घर का हर सदस्य अपनाए।

होना यह चाहिए कि भोजन की मेज़ पर घर के माहौल को ख़ुशनुमा बनाने का प्रयास करें और बच्चों की आँखें भोजन की थाली पर रहे, जिससे वो भोजन की खुशबू, रंग और स्वाद से परिचित हों, ना कि पूरे समय मोबाइल स्क्रीन पर अपना ध्यान लगाए रखें।

हे भगवन...
हमें छोटे-छोटे बच्चों को अच्छी आदतें सिखाने के लिए पहले स्वयं उनके समक्ष ऐसे उदाहरण प्रस्तुत करने का प्रयास करना चाहिए, ताकि वो हमें देख कर उन्हें जल्दी सीख सकें और अपने जीवन को आसान बना सकें।

सभी स्वस्थ एवं प्रसन्न रहें और अपने जीवन को सार्थक करें, यही ईश्वर से प्रार्थना है!!

- मधु अजमेरा जी, ग्वालियर (म. प्र.)

बाबूजी

रोकर - गाकर सब सहते हैं, बाबूजी
अपना दुखड़ा कब कहते हैं, बाबूजी।

निज कुटुंब के लिए मकान बनाया है
स्वयं कँगूरे - से ढहते हैं, बाबूजी।

घर के सारे लोग शिकायत करते हैं
सबकी सुनते, चुप रहते हैं, बाबूजी।

फीस, किताबें, बिजली का बिल भरते हैं
संचित धन का कर गहते हैं, बाबूजी।

मेला, हाट, पर्व, बीमारी से निबटें
निज सुस्मृतियों में बहते हैं, बाबूजी

धोती, कुर्ता, चप्पल, चश्मा बतियाते
अंदर ही अंदर दहते हैं, बाबूजी।

पेंशन आते ही बँट जाती घर भर में
शिशुओं - सा सबसे लहते हैं, बाबूजी।

- गौरीशंकर वैश्य जी, 'विनम्र', विकासनगर (लखनऊ)

MXCREATIVITY
Brand Creation & Digital Marketing

+91 80805 18745
info@mxcreativity.com

You Can RELAX...
... As We GROW Your BRAND

- Branding & Advertising
- Graphic Design
- Website Development
- Content Writing
- Digial Marketing
- Mobile App Development

www.mxcreativity.com

अधिकमास का पौराणिक आधार –

भक्त प्रहलाद और राजा हिरण्यकश्यप की कहानी हम सबको विदित है, यह कथा दैत्यराज हिरण्यकश्यप के वध से जुड़ी है। जिसका मूलरूप अधिक मास जुड़ा हुआ है। दैत्यराज हिरण्यकश्यप ने ब्रह्मा जी से अमरता के लिए वर माँगने हेतु कठोर तप किया, कठोर तप के प्रभाव से ब्रह्मा जी प्रसन्न हुए और मनवांछिंत वर माँगने को बोलै तो उसने अमरता का वरदान माँगा। अमरता का वरदान देना निषिद्ध है, इसीलिए ब्रह्मा जी ने उसे कोई भी अन्य वर माँगने को कहा। तब हिरण्यकश्यप ने वर माँगा कि उसे संसार का कोई नर, नारी, पशु, देव व् असुर मार ना सके, वर्ष के किसी भी 12 माह में मृत्यु को प्राप्त ना हो, ना दिन का समय हो, ना रात का, ना किसी अस्त्र से मरे, ना किसी शस्त्र से, और ना घर में, ना ही घर से बाहर मृत्यु को प्राप्त हो। ब्रह्मा जी ने उसे यह वर दे दिया। इस वरदान के मिलते ही हिरण्यकश्यप स्वयं को अमर मानने लगा और उसने खुद को भगवान घोषित कर दिया। समय आने पर भगवान विष्णु ने अधिक मास में नरसिंह अवतार यानि आधा पुरुष और आधे शेर के रूप में प्रकट होकर, संध्या के समय, घर की देहरीज पर अपने नाखूनों से हिरण्यकश्यप का सीना चीर दिया और उसको मृत्यु दंड कर संसार को एक पापी से मुक्त किया।

क्यों होता है अधिकमास –

भारतीय पंचांग (खगोलीय गणना) के अनुसार प्रत्येक तीसरे वर्ष एक अधिक मास होता है। यह सौर और चंद्र मास को एक समान लाने की गणितीय प्रक्रिया है। शास्त्रों के अनुसार पुरुषोत्तम मास में किए गए जप, तप, दान से अनंत पुण्यों की प्राप्ति होती है। सूर्य की बारह संक्रांति होती हैं और इसी आधार पर हमारे चंद्र पर आधारित 12 माह होते हैं। हर तीन वर्ष के अंतराल पर अधिक मास या मलमास आता है। इसे मास को अधिक मास, पुरुषोत्तम मास, मल मास आदि नामों से जाना जाता है। शास्त्रानुसार इस माह में माँगलिक कार्य नहीं किये जाते बल्कि धार्मिक अनुष्ठान, स्नान, दान, उपवास आदि धर्म-कर्म के कार्य ही किये जाते हैं।
शास्त्रानुसार-

यस्मिन चांद्रे न संक्रांति: सो अधिमासो निगह्यते,
तत्र मंगल कार्यानि नैव कुर्यात कदाचन्।
यस्मिन मासे द्वि संक्रांतिक्षय: मास: स कथ्यते,
तस्मिन शुभाणि कार्याणि यत्नत: परिवर्जयेत।।

ऐसा माना जाता है कि अधिकमास में किए गए धार्मिक कार्यों का किसी भी अन्य माह में किए गए पूजा-पाठ से 10 गुना अधिक फल मिलता है। यही वजह है कि श्रद्धालु जन अपनी पूरी श्रद्धा और शक्ति के साथ इस मास में भगवान की पूजा, अर्चना करते जिससे अपना इहलोक तथा परलोक सुधर जाये।

अधिक मास कब और क्यों आता है –
वशिष्ठ सिद्धांत के अनुसार भारतीय हिंदू कैलेंडर सूर्य मास और चंद्र मास की गणना के अनुसार चलता है। खगोलीय तथ्य है कि सूर्य एक राशि को पार करने में 30.44 दिन का समय लेता है और यही सूर्य का सौर महीना है। ऐसे 12 राशियों को पार करने यानि सौर वर्ष (बारह महीनों) का समय जो 365.25 दिन का होता है। चंद्रमा का महीना 29.53 दिनों का होता है जिससे चंद्र वर्ष में 354.36 दिन ही होते हैं। लगभग हर तीन साल (32 माह, 16 दिन, 8 घटी) बाद यह अंतर 32.5 माह के बाद यह एक चंद्र माह के बराबर हो जाता है। इस समय को समायोजित करने और ज्योतिषीय गणना को सही रखने के लिये हर तीसरे वर्ष में एक अधिक मास होता है।

एक अमावस्या से दूसरी अमावस्या के बीच कम से कम एक बार सूर्य की संक्रांति होती है। यह प्राकृतिक नियम है। जब दो अमावस्या के बीच कोई संक्रांति नहीं होती तो वह माह बढ़ा हुआ होता है, जिसे अधिक मास कहते है। संक्रांति वाला माह शुद्ध माह, संक्रांति रहित माह अधिक माह और दो अमावस्या के बीच दो संक्रांति हो जायें तो क्षय माह होता है। क्षय मास कभी कभी होता है।

मल मास क्यों कहा गया –
हिंदू धर्म में अधिकमास के दौरान सभी पवित्र कर्म वर्जित माने गए हैं। माना जाता है कि अतिरिक्त होने के कारण यह मास मलिन होता है। इसलिए इस मास के दौरान हिंदू धर्म के विशिष्ट व्यक्तिगत संस्कार जैसे नामकरण, यज्ञोपवीत, विवाह और सामान्य धार्मिक संस्कार जैसे गृहप्रवेश, नई बहुमूल्य वस्तुओं की खरीदी आदि आमतौर पर नहीं किए जाते हैं। मलिन मानने के कारण ही इस मास का नाम मल मास पड़ा है।

पुरुषोत्तम मास नाम क्यों –
अधिकमास के अधिपति स्वामी भगवान विष्णु माने जाते हैं। इस विषय में कहा जाता है कि भारतीय ज्योतिषियों ने अपनी गणना पद्धति से हर चंद्र मास के लिए एक देवता निर्धारित किए। चूंकि अधिकमास सूर्य और चंद्र मास के बीच संतुलन बनाने के लिए हुआ, तो इस अतिरिक्त मास का अधिपति बनने के लिए कोई भी देवता तैयार ना हुआ। ऐसे में ऋषि-मुनियों ने भगवान विष्णु से आग्रह किया कि वे ही इस मास का भार अपने ऊपर लें। भगवान विष्णु ने इस आग्रह को स्वीकार कर लिया और भगवान विष्णु का एक नाम पुरुषोत्तम भी है। इसीलिए अधिकमास को पुरुषोत्तम मास के नाम से भी पुकारा जाता है।

अधिक मास में न करें –
मलमास में शुभ कार्यों को न करने का विधान हैं। जैसे कि इस माह में कोई स्थापना, विवाह, मुंडन, नव वधु गृह प्रवेश, यज्ञोपवित, नामकरण, संस्कार व कर्म करने की मनाही है तो साथ ही कुछ नया पहनना वस्त्रादि, नई खरीददारी करना वाहन आदि का भी निषेध माना जाता है। परन्तु जो कार्य पहले शुरु किये जा चुके हैं उन्हें जारी रखा जा सकता है।
संतान जन्म के कृत्य जैसे गर्भाधान, पुंसवन, सीमंत आदि संस्कार किये जा सकते हैं। पितृ श्राद्ध भी किया जा सकता है।

अधिक मास में करें -
अधिकमास में श्रद्धालु व्रत - उपवास, पूजा - पाठ, ध्यान, भजन, कीर्तन, तीर्थ स्नान आदि करते हैं। इस मास के दौरान यज्ञ - हवन के अलावा श्रीमद् देवी भागवत, श्री भागवत पुराण, श्री विष्णु पुराण, भविष्योत्तर पुराण आदि का श्रवण, पठन, मनन विशेष रूप से फलदायी होता है। अधिकमास के अधिष्ठाता भगवान विष्णु हैं, इसीलिए इस पूरे समय में विष्णु मंत्रों का जाप विशेष लाभकारी होता है। ऐसा माना जाता है कि अधिक मास में विष्णु मंत्र का जाप करने वाले साधकों को भगवान विष्णु स्वयं आशीर्वाद देते हैं, उनके पापों का शमन करते हैं और उनकी समस्त इच्छाएं पूरी करते हैं। महा मृत्युंजय, रुद्र जप आदि अनुष्ठान भी करने का विधान है।

अधिक मास के आरंभ होते ही प्रात:काल स्नानादि करके भगवान सूर्य को पुष्प चंदन एवं अक्षत से मिश्रित जल का अर्घ्य देकर उनकी पूजा करनी चाहिये। इस मास में देशी (शुद्ध) घी के मालपुए बनाकर कांसी के बर्तन में फल, वस्त्र आदि सामर्थ्यनुसार दान करने चाहिये।

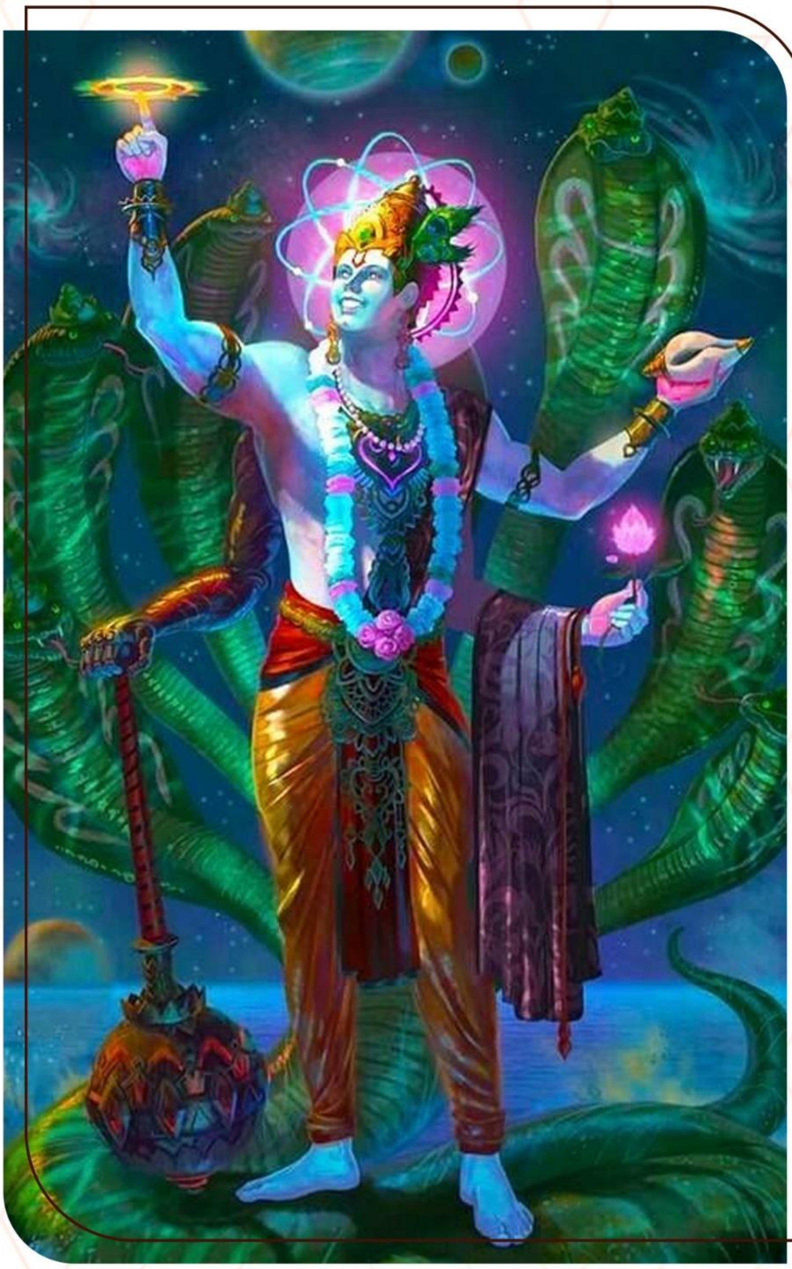

अधिक मास में दान का महत्व

अधिक मास में पूजा-पाठ, दान, जाप और आराधना का फल भी अधिक मिलता है। इसलिए अधिक मास में दान का अपना खास महत्व है, जिसमें तिथिवार दान का फल बताया गया है। माना जाता है कि लगभग एक महीने की इस समय अवधि में कुछ विशेष चीजों का दान करना बहुत शुभ होता है, इन चीजों का दान करने से घर में बरकत आती है और धन-धान्य में वृद्धि होती है। मान्यतानुसार इस दौरान दीपदान करना शुभ होता है।

पुरुषोत्तम मास की तिथिनुसार दान सामग्री –
- प्रतिपदा के दिन चांदी के दीपक / पात्र में घी भरकर दान करें।
- द्वितीया के दिन कांसे के पात्र में स्वर्ण दान करें।

- पूरा पढ़े –

www

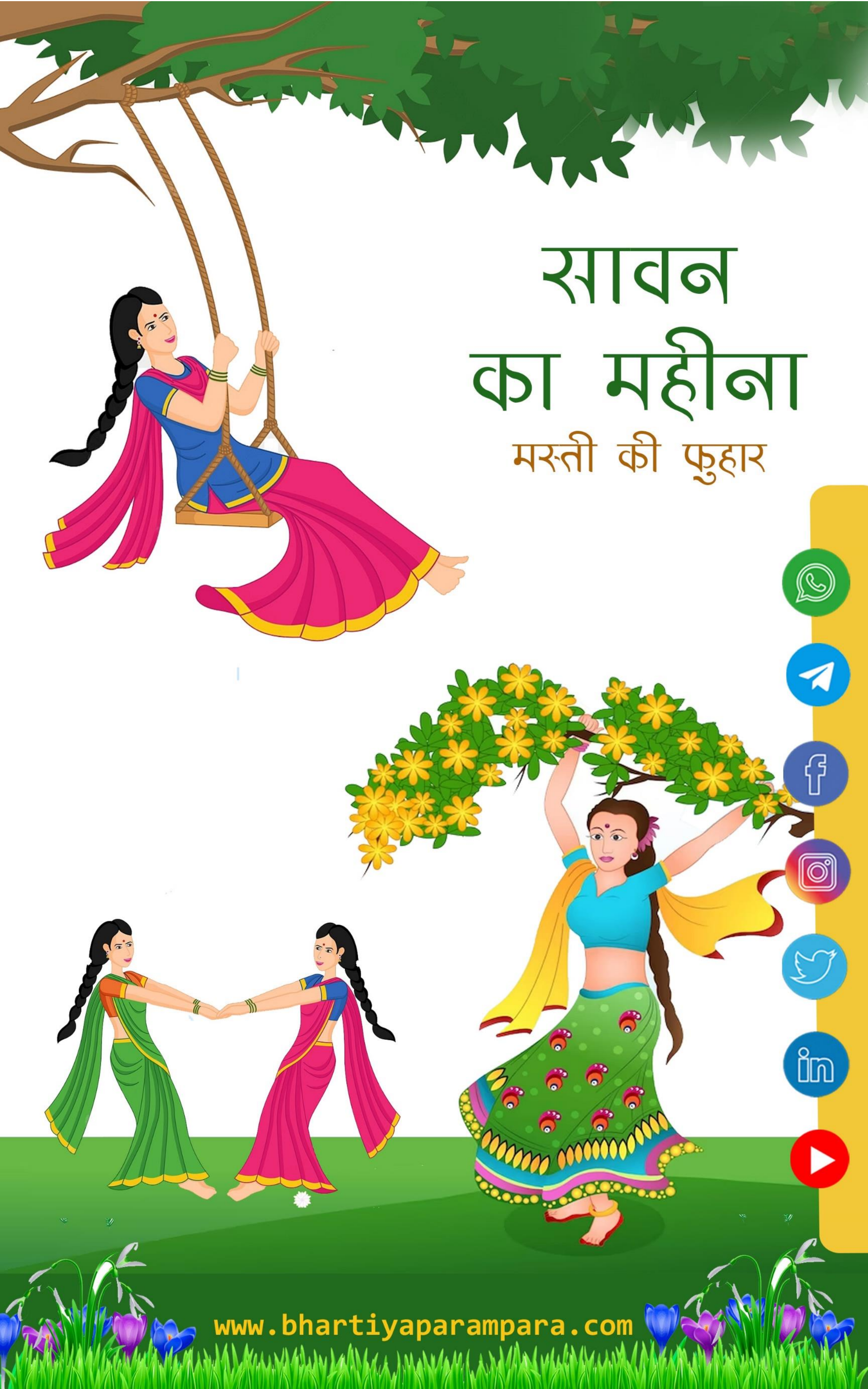
सावन
का महीना
मस्ती की फुहार
www.bhartiyaparampara.com